Bholanatha Dardi
Sahıdom ke tarrane

शहीदोंके तराने

प्रकाशक—पं० रामप्रसाद मिश्र, १७० हरिसन रोड, कलकत्ता।

मूल्य –)॥

...ver Printed at the Central New Press 134 B. Machna Bazar Street Calcutta

शहीदोंके तराँने

Śahīdoṁ ke tarrāne

लेः तथा संग्रहकर्ता

भोलानाथ दर्दी ।

Bholanatha Dardi

प्रकाशक :-

बाबू सूर्य्यपाल सिंह

मु० चातर पो० बबुरा,

(जि० आरा)

शहीदोंके तराने

१

चेतावनी

कव्वाली

जागो, हुआ सबेरा, गांधी जगा रहा है।
यह आत्म-बल-प्रवर्द्धक, शुभ काल जा रहा है
अन्याय की निशासे, अंधेर से न डरना।
सूरज-स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है॥
सुस्ताके बिस्तरे से, फुरतीसे उठ खड़े हो।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है॥
हों नाजवान तुमको जग जाना चाहिये अब॥
सोने दो वृद्धजनको आलस्य आ रहा है॥
यह दासता तो सुखका सपना है, भ्रम है 'योगी'
स्वाधीनताके सुखका अवसर ये आ रहा है॥

२

(दिलमें है)

गजल ।

एक दिन देखेंगे हम भी वरुफ क्या कातिलमेंहै
काफिलाये दिल मेरा उम्मीद की मंजिलमें है।
यारकी फुर्कतमें अब तड़पा नहीं जाता तबीब ।
दम निकल जाये यही हसरत दिले बिस्मिलमें है
मजलिसे माशूकमें है बन्द आशिक की जबां ।
क्या बतायें आजकल जो कुछ हमारे दिलमें है
आज नाचैगी बरहना तेग ऐ कातिल तेरी ।
इसलिये जांबाज़ोंका मजमा तेरी महफिलमे है।
कौमके मजनू न घबड़ा चन्द दिन तस्कीन रख
तेरी आजादी की लैला जेलके मयमिलमें है।
एक दिन सर सब्ज होकर यह दिखायेगा समर
क्या हुआ 'सरयू' अगर इस वक्त दानागिलमे है

३

राष्ट्रपति जवाहरलाल जेलमें।

गया जेल में है हमारा जवाहिर।
वह मोतीकी आंखोंका तारा जवाहिर।
गुलामीकी जंजीरको जिसने तोड़ा।
बृटिश कूट नीतिके भंडाको फोड़ा।
अहिंसाका करमें लिया उसने कोड़ा।
पड़ा कूद संग्राम में मुंह न मोड़ा।
जो था मात भारतका प्यारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर।
गुलामी की जंजीर में जो कसे थे।
गवरमेन्ट के लोभमें जो फंसे थे।
युवक देशके भोगमें जो फँसे थे।
निराशा के जो मन्दिरोंमें बसे थे।
उठाकर उन्हें यह उचारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर।
किया दूधका दूध पानी का पानी।

पड़ी कैद में मात भारत भवानी।
हो आजाद भारत यही ठान ठानी।
न आगे पड़ैं जिसमें सख्ती उठानी।
यही दिल में अपने विचारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर।

हुआ मुल्क आजाद क्यों सो रहे हो।
बनाओ नमक वक्त क्यों खो रहे हो।
अभीसे ही हिम्मत को क्यों हर रहे हो।
बढ़ाओ कदम बेर क्यों कर रहे हो।
यही गांधी ने पुकारा जवाहिर।
गया जेल में है हमारा जवाहिर।

जिमींदार करते किसानों पै सख्ती।
वृटिशकी थीं खूनी कृपाणें चमकतीं।
लिया शीघ्र ही करमें नीतिकी तख्ती।
थी आजादीकी दिलमें अग्नी धधकती।
किसानोंका नूरे नजारा जवाहिर।
गया जेलमें है हमारा जवाहिर।

—"विमल"

४

लेखक—भोलानाथ "दर्दी"

भगतसिंह ! जिन्दाबाद का,
लगता था नारा यारोंमें ।
जब चले भगत होनेको कत्ल,
छाई सुर दनी हत्यारों में ।
हंस कर सुखदेव भगतसे कहें,
मुझे भाई पहले होने दो शहीद ।
हम भगतके भक्त हैं सुन रकीब,
हमे पहले चढ़ाओ दारोंमें ।

शेर

क्या अदा सुखदेवमें थी चढ़ गये जब दारमें ।
लग रहे थे मोरचे सैय्यादके तलवारमें ।
कत्ल कर कातिल भगतके भक्तको जल्दी जरा
टुकड़े २ हो गइ सुनकर छुरी जल्लादकी ।
जिस वख्त दार पै गये भगत,
ललकार वृटिश का नाश कहा ।

हो जांय गर्क दुश्मन मेरे,

कह तजा प्राण हत्यारों में।

शेर

कयामत हो गई वरपा जमीं थर्रा उठी उसदम।
मेरे प्यारे भगतका नगमा हो पढ़ने लगे उसदम
फरीस्ते हांथ मलते थे शवा सरको पटकती थी
जमीनों आसमांपर छा गया एकबारगी मातम
थर्राया फलक उठी कांपजमीं,

लाहौर की जेलसे निकली शदा।

हो गये शहीद भगत वो गुरू,

ये धूम है "दर्दी" बाजारोंमें।

आजादीका दीवाना था मस्ताना भगतसिंह।
एसम्बली में घुस गया दर्राना भगतसिंह॥
सन उन्निस सै उनन्तिस और अप्रैल आठके,
बम मारके डटा रहा मरदाना भगतसिंह।
है उसको फांसीका कलक हिन्दोस्तानको,
बस छोड़ गया दुनियांमें अफसाना भगतसिंह।

है बच्चे बच्चेकी जबांपर उस्का फिसाना ।
वो शेरे नर पंजाब दिलेराना भगतसिंह ।
एसम्बलीकी मिटिंगमें बम फेंकके यारों,
एक बाल खुदी कर गया मरदाना भगतसिंह ।
गैरोंको मुसीबतमें फंसा देखके यारों,
अपनी ही जां पै खेल गया दाना भगतसिंह ।
लाहोरके थानोंमें पर्चे लाल बांट के,
कहता था सितम अब कभी मत ढाना भगतसिंह
हड़ताल मनाइ गई हिन्दोस्तानमें,
बस कर गया एक आलमको दीवाना भगतसिंह
हड़ताल भूख जेलमें की तीन महीने,
बे आबो दाना जिन्दा रहा दाना भगतसिंह ।
फिर भी तो सात पौंड वजन और बढ़ गया ।
बस खूने दिल पिया लिया गम खाना भगतसिंह
कहती थी यूं सरकार के तुम माफी मांग लो,
पर बन गया आजादीका परवाना भगतसिंह ।
कहती थी यूं सरकारके क्या चाहते हो कह दो

गोली दिखा दो फांसी मत लटकाना भगतसिंह
लाहौरका वो रहनेवाला शेर बबर दिल,
कर नाम गया दुनियांमें मरदाना भगतसिंह ।
सरदार किशनसिंह है उनके पिताका नाम,
मरदोंमें मर्द आकिला और दाना भगतसिंह ।
सुकदेव और राजगुरु और भगतसिंह,
तीनोंका बना स्वर्गमें स्थाना भगतसिंह ।

—देश सेवक ।

५

किस शानसे पहुंचा है सरदार भगतसिंह,
मन्सूर है उस दौरका सरदार भगतसिंह ।
तख्ते पै खड़ा हो रसन चूमके बोला,
कर जेबे गुलू आज ये जुन्नार भगतसिंह ।
सतलजमें तेरी अस्थियां किस तरह न बहतीं,
क्या कम थीं तेरे अज्मकी रफ्तार भगतसिंह ।
हमराह थे सुखदेव भी और राजगुरु भी,
दोनोंने बढ़ाया है तेरा प्यार भगतसिंह ।

—"फिदा" बी० ए० ।

६

शहीदोंके प्रति ।

भइया नहीं है लाशां यह वे कफन तुम्हारा ।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा ।
दिन तेईसका यह होगा त्योहार एक कौमी ।
बैकुण्ठको हुआ है इस दम गमन तुम्हारा ।
जाया लहू तुम्हारा जानेका यह नहीं है ।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा ।
सब भक्तियोंसे बढ़कर उत्तम है देशभक्ती ।
छुटा है बाद मुद्दत आवा गमन तुम्हारा ।
इतिहासमें रहेंगी कुरबानिया तुम्हारी ।
तुमपर फखर करेगा प्यारा वतन तुम्हारा ।

—दर्दी ।

७

जा रहे हैं उनसे अब आंखें लड़ानेके लिये ।
जिन्दगोको ख्वाबे गफलतसे जगानेके लिये ।
लीजिये बैठे बिठाये फिर उम्मीदें जग गई ।
आपसे किसने कहा था दिल लगानेके लिये ।

ओंठ जब कांपे तो आंसू डबडबा आये मेरे।
दास्तांका आखिरी टुकड़ा सुनानेके लिये।

शेर

दर्द है दिलके लिये गम है मेरे दमके लिये।
और ये खूने जिगर दीदये पुरनमके लिये।
मुझको अब क्यों न रुलाये तेरे मिलनेकी खुशी
ईद जाती है जमानेमें मुहर्रमके लिये।
गर्क इशरत होके जानेसे कहीं बेहतर "दर्दी"
दस्त इबरत होके मर जाना जमानेके लिये।

—भोलानाथ "दर्दी"।

८

मिटेंगे देश पै अपने यही अब दिलमें आई है।
करें आजाद भारतको यही एक धुन समाई है।
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत बीर भूमी है
करें बरबाद हम इनको कि जिनसे दुसमनाइ है
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यानमें रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके सपथ हमने यह खाई है

हैं क्या शै जेल औ फांसी डराते हो हमें जिनसे
करें आदर्शपर तिल तिल न वह भी दुःखदाई हैं
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल न जाना
नहीं अपमान सह सकते जो भारतके शेदाई है।
ये क्या बेड़ोकी चारों ओरसे झनकार होती है।
नये सरसे हमारे सर पै क्यों तलवार होती है।
अजब यह वक्त आया है कि बच्चे मुस्कुराते हैं
धड़ाधड़ गोलियोंकी उन पै जब बौछार होती है
अजब गांधीका यह मन्तर सभीके दिलमें बैठा है
गुलामोंकी जहांमें जिन्दगी बेकार होती है।
वो ज्यों ज्यों राहमें कांटें बिछाते जाते हैं उनके
अजब हैरत है उनकी तेज ही रफ्तार होती है।
नजर दुनियांमें ऐसे ही नज्जारे आने लगते हैं।
कौम जब जुल्मियोंके जुल्मसे बेजार होती है।
कहां ईमाने खुदगर्जीके बादल छाये रहते हैं।
किसीके मुल्कमें जब गैरकी सरकार होती है।
अरे तूफान जोरों जुल्मके भी देखते रहना।

बहुत ही जल्द किस्ती हिन्दकी अब पार होती है

— प्राप्त दर्दीसे।

६

❀ रसिया ❀

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंगमें पकड़ूंगी तलवार भारतको आजाद करूंगी। नहीं जेलसे बलम डरूंगी मार खांउगी नहीं मरूंगी करूं नमक तैयार। प्रीतम। गांधीजीका हुकुम बजाऊं। घर घरमें उपदेस सुनाऊं अपनी बहनोंको समझाऊं। करु खूब प्रचार। प्रीतम। अपना पहेनूं कता स्वदेसी। नहीं खरीदूं माल विदेसी भुला करेंगे तब परदेसी। हुआ गरम बाजार प्रीतम। मेरी बहनों सुनलो तुम अब। बनो नाइडू सरोजनी सब हां मिल होगा तभी तो मतलब। हो रहा अत्याचार। प्रीतम। चरखेकी मैं तोप बनाऊं। बना सूतके गोले चलाऊं। मानचेस्टरके किलेको ढाऊं। पाऊं फते भरतार। प्रीतम। बड़ा सबरेका मीठा है फल।

आज नहीं गर मिला मिलै कल हमारी आहोंकी यक हल चल करैंगी धूवांधार प्रीतम नहिं पीछेको कदम हटाऊँ। नहिं माताका दूध लजाऊँ रजपूतीका हुनर दिखाऊँ। कस पांचों हथियार गांधीजीने कदम बढ़ाके। सबकी हिम्मत दई बधाके। रकीब दिलका दिल दह-लाके। कर दिया अब मुरदार प्रीतम

गान्धीजी बन रहे कलन्दर। शशो पंजमें पड़ गये सुनकर होनी हो सो होय बिरादर। कहां करे करतार। प्रीतम--यह रसिया गागाके सुना दूं। जोश जनानोंको भि दिलादूं। मुहसे नहीं करके भि दिखा दूं। हो गई हूं तैयार प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंगमें पकड़ूंगी तलवार

१०

❀ बन्देमातरम् ❀

मोतीलालजी स्वर्ग सिधरे प्रभुजी,

भारत नैया है हाथ तिहारे प्रभुजी ॥टेक॥

छोड़कर हम सबोंको देशसे न्यारा हुए।
आज मर जानेपर उनकी जगत अंधियारा हुए।
टूटी भारतके बांह हमारे प्रभुजी ॥१॥
हाय अफसोस एक देशका तारा गया।
देश बन्धु मोतीलाल भारतका सहारा गया।
भारत माताके थे वो दुलारे प्रभुजी ॥२॥
यह शोक भगवन् सर्वदा हृदयसे मिट सकता नहीं
सकल मोतीलालजीको नेत्रसे हटना नहीं।
यही आपसे अरज गुजारे प्रभुजी ॥३॥

११

इन गांधी टोपीवालोंने।

इक लहर मचा दी भारत में इन गाँधी टोपीवालों ने।
"स्वाधीन बनों" यह सिखा दिया, इन गाँधी टोपीवालोंने
सदियोंकी गुलामीमें फँसकर, अपनेको भी जो भूले थे।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपीवालोंने॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सुपूत हो माता के।
सर्वस्व-त्याग का मंत्र दिया, इन गाधी टोपीवालोंने॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देश द्रोही बनकर।
उनको सत् पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपीवालोंने॥

पट बंद हुए कितने मिलके, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपीवालों ने ॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सर धुन बिललाते हैं।
खादीसे प्रेम किया जबसे, इन गांधी टोपीवालों ने ॥
आदर्श जो हैं इस भारतके, दोनों के प्राण-पियारे हैं।
नेता गांधीको बना लिया, इन गांधी टोपीवालों ने ॥
अब मेल करो आपसमें तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गांधीका कहना यह, इन गांधी टोपीवालों ने ॥
है विकट समस्या 'तीस' की भी, उसको भी हल करना होगा
ज़रिया बस एक निकाल लिया, इन गाँधी टोपीवालोंने ॥
युवकोंके हृदय-दुलारे हैं, आँखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहरको राजा, इन गाँधी टोपीवालों ने ॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब
विश्वास दिलाया ऐसा हो, इन गाँधी टोपीवालों ने ॥

श्रीविष्णुमित्र विद्यार्थी "दग्ध"

मुद्रक—
शेख कमरुद्दीन,
कमर प्रेस
नं० ५, चितपुर स्पर, कलकत्ता।